Krishna Nand B.A I Hons (2) मनोविदलता
(continue)

को विचित्र प्रकार से मोड़ कर खड़े रहते घण्टों हैं या बैठ जाते हैं। एक ही मुद्रा या आसन में कई दिनों तक बैठे रहते हैं, विचित्र रूप से हँसते हैं तथा टकटकी लगाकर शून्य की ओर टकटकी लगाकर शून्य की ओर काफी देर तक देखते रहते हैं।

(7) भाषा विकृतियाँ (Language disorders) - मनोविदलता से पीड़ित रोगियों में भाषा संबंधी विकृतियां भी पाई जाती है। इसके कुछ रोगी एकदम मौन रहते हैं, तो कुछ लच्छेदार वाक्यों का प्रयोग करते हैं। परन्तु उनकी भाषा, शब्द और उच्चारण में तालमेल का पूर्णतः अभाव पाया जाता है। उनके वाक्य निरर्थक होने के साथ-साथ अधूरे भी होते हैं। कभी-कभी एक ही वाक्य को घण्टों दुहराते पाए जाते हैं। इनकी जबान पर किसी प्रकार का नियन्त्रण नहीं होता है। कभी-कभी ये नए-नए शब्दों का निर्माण भी करते हैं जिनका कोई अर्थ नहीं होता है।

(8) लेखन-संबंधी विकृतियाँ (writing disorders) इसके रोगियों में लेखन संबंधी विकृतियाँ भी पाई जाती है। कुछ रोगी सालों तक कुछ नहीं लिखते हैं और कुछ ऐसे होते हैं जो बराबर कुछ न कुछ लिखते ही रहते हैं। उनके लेखन में विचारों की अस्थिरता और शैली की पुनरावृत्ति पाई जाती है। पीड़ित व्यक्ति अपने विचारों का केवल भाषा के माध्यम से ही प्रकटीकरण नहीं करता बल्कि प्रतीकों, चिन्हों, रेखाओं का भी प्रयोग करता है। साथ-ही-साथ व्याकरण और विराम चिन्ह आदि का भी ध्यान इनके द्वारा नहीं दिया जाता है।

की अवस्था में दैवी या शैतानी आदेशों की आवाजें सुनते हैं, दृश्य संबंधी विभ्रमों आपके मृत परिजनों या ईश्वर दर्शन का विभ्रम होते पाया जाता है। उन्हें खाने में विचित्र स्वाद की अनुभूति होती है। वे समझते हैं कि उनके दुश्मनों ने उनकी हत्या करने के लिए भोजन में जहर मिला दिया है तथा आस-पास में विषैली गैस छोड़ दी है। इस प्रकार का विभ्रम लगभग सभी प्रकार के मनोविदलता से पीड़ित रोगियों का मुख्य लक्षण है।

(5) व्यामोह (Delusion) — मनोविदलता से पीड़ित व्यक्ति में व्यामोह या भ्रान्ति के लक्षण भी प्रमुखता से विद्यमान होते हैं। व्यामोह गलत विश्वास पर आधारित होते हैं जिसके न होने का सबूत उपस्थित होने के बावजूद भी व्यक्ति उसे गलत मानने को तैयार नहीं होता है। मनोविदलता के कुछ रोगी ऐसे होते हैं जिनमें एक ही व्यामोह प्रबल होता है, परंतु कुछ रोगी ऐसे भी होते हैं जिनमें एक से अधिक व्यामोह स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। APA, 1994 के अनुसार मनोविदलता में सबसे प्रमुख व्यामोह दण्डात्मक व्यामोह होता है जिसमें रोगी को ऐसा विश्वास हो जाता है कि लोग उन्हें योजनाबनाकर विरोधित कर रहे हैं, डरा-धमका रहे हैं या उनपर आक्रमण करने वाले हैं या दूसरे लोग उसे तरह-तरह से कष्ट पहुँचाने का षड्यंत्र रच रहे हैं। इसके अलावे प्रभाव का व्यामोह, महानता का व्यामोह, रोगात्मक आदि कई प्रकार के व्यामोह भी पाया जाता है।

(6) व्यवहार संबन्धी विकृतियाँ (Behavioural disorder)

मनोविदलता के रोगी का व्यवहार सामाजिक प्रतिमान से पूर्णतः भिन्न होता है। पीड़ित व्यक्ति का व्यवहार स्थिरीकृत (Stereotyped) तथ आवेगशील होता है। रोगी अपने शरीर